पाठ – 2 (दादी माँ)

शब्दार्थ :–

प्रतिकूलता – सही परिस्थितियाँ न होना
क्वार – अश्विन का महिना
सिवान – नाला
आषाढ़ – गरमी का महिना
अगहन – पौष का महिना
चैत – चैत्र का महिना
हुड़क – चाहत
सन – जूट
सरसाम – सिर पर चढ़ने वाला बुखार
विशूचिका – संक्रमण की बीमारी
कार परोजन – काम का उद्देश्य
निकसार – बाहर निकलने का स्थान
सूद – ब्याज
निस्तार – उद्धार
उरिन – ऋण से मुक्त करना
वात्याचक्र – घटनाक्रम
पछुवा – पश्चिमी हवाएँ
पाला – ठंड
अतुल – बहुत ज़्यादा
संदूक – अटैची

अतिरिक्त प्रश्नोंत्तर :–

१. क्वार के दिन आते ही लेखक को क्या लगने लगता है ?
२. महामारी या छूत की बीमारी होने पर दादी माँ क्या करती थीं ?
३. सभी ऐसा क्यों कहते थे कि दादी माँ कुछ नहीं करतीं ?
४. गाँव में विवाह के समय क्या रिवाज़ था ?
५. बाहर दालान में कौन सो रहा था और क्यों ?
६. दादा ने दादी को क्या धोखा दिया ?
७. दादी ने सहा कंगन सहेजकर क्यों रखा ?
८. लेखक को किस बात पर विश्वास नहीं हो रहा था ?

**** इन प्रश्नों के उत्तर आपको आगे दे दिए जाएँगे । यह काम अपनी हिंदी की स्कूल की कॉपी में करें । ****